विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर कुटीर उद्योगों का प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 05.05.2026
स्वीकृतः 08.06.2026

48

भाग्य श्री
शोधार्थिनी, (भूगोल विभाग)
पी. एन. जी. पी.जी. कॉलेज
रामनगर, नैनीताल
ईमेलः *shri201718@gmail.com*

डॉ0 देवकीनन्दन जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर, (भूगोल विभाग)
पी. एन. जी. पी.जी. कॉलेज
रामनगर, नैनीताल

सारांश

हमारे देश में अनेको जनजातियाँ है तथा उनमें से कुछ जनजाति की महिलाएं किसी न किसी कुटीर उद्योग में लगी हुई है, जो उनके आर्थिक क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। उसी तरह उत्तराखण्ड राज्य के ऊधमसिंह नगर जिला के एक विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाएं भी कुटीर उद्योगों में संलग्न है और कुटीर उद्योगों के द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रही है। कुटीर उद्योगों में लगी थारू महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है, जिससे उनका सामाजिक और राजनीतिक एवं सशक्तिकरण भी हो रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर कुटीर उद्योगों का प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन' किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि आज किस प्रकार थारू महिलाएं घर की चार दिवारी में रहकर भी अपने परिवार का पालन–पोषण कर सकती है और साथ ही वह स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनी सकती है।

मुख्य शब्द

थारू, जनजाति, महिला, कुटीर उद्योग, स्वरोजगार, सशक्तिकरण

प्रस्तावना

हमारे देश में प्राचीन काल से ही कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कुटीर उद्योग देश के आर्थिक विकास में योगदान की दृष्टि से एक विषेश स्थान रखते है। कुटीर उद्योग वह उद्योग होते है, जिनका संचालन पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से परिवार के एक ही सदस्य द्वारा किया जा सकता है। कुटीर उद्योगों में वस्तुओं का निर्माण कम पूंजी एवं अधिक कुशलता से अपने हाथों से किया जा सकता है। कुटीर उद्योगों में उत्पादन एवं सेवाओं का सृजन अपने घर पर ही किया जा सकता है। कुटीर उद्योगों में इस्तेमाल होने वाला अधिकतर कच्चा माल कृषि क्षेत्र से आता है। इसमें कम पूंजी लगाकर अधिक उत्पादन किया जा सकता है और बड़ी मात्रा में रोजगार प्रदान किया जा सकता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.048

वर्तमान समय में थारू महिलाएं कुटीर उद्योग से अपने आर्थिक जीवन को संवारने में लगी हुई है। थारू महिलाएं अब केवल रसोईघर तक सीमित नही है, वे घर में खाली नही बैठना चाहती है। उन्होनें अपने समय का सदुपयोग करना शुरू कर दिया है और यही वजह है कि घरों में रहने वाली थारू महिलाओं ने भी बहुत से कुटीर उद्योगों से खुद को जोड़ लिया है। आज के समय में थारू महिलाएं घर बैठे ही सिलाई, कढ़ाई, मोमबत्ती, अगरबत्ती, पूजा थाली तथा घास से बनी टोकरियां, डलिया, कपड़ों की दरी आदि बनाने का काम कर रही है। ऐसे कुटीर उद्योगों में लगातार थारू महिलाओं की रूचि बढ़ रही है। जब महिलाओं के हाथ में रोजगार आता है। तो उनके परिवार की आर्थिक स्थिति तो सुधरती ही है तथा साथ में महिलाओं का आत्मविश्वास भी बढ़ता है और उनकों सक्षम बनाता है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड सितारगंज उत्तराखण्ड राज्य के जिला ऊधम सिंह नगर के दक्षिण में स्थित है। सितारगंज की उत्तरी सीमा जिला नैनीताल से लगती है तथा सितारगंज की दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश के पीलिभीत जिला से लगती है। सितारगंज का अंक्षाशीय विस्तार 28.93° उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 97.70 पूर्व के बीच पाया जाता है।

विकासखण्ड सितारगंज का मानचित्र

जनसंख्या

ऊधमसिंह नगर में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या सबसे अधिक पायी जाती है। ऊधमसिंह नगर में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 2011 की जनगण्ना के अनुसार कुल जनसंख्या 1,23,037 जिसमें से विकासखण्ड सितारगंज में थारू जनजाति की कुल जनसंख्या 36,992 है, जिसमें पुरुषों की कुल जनसंख्या 18,616 है और कुल महिलाएं 18,376 है।

ताालिका 1 : 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या

कुल जनसंख्या	कुल पुरुष	कुल महिला
36,992	18,616	18,376

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका, 2011 ऊधमसिंह नगर

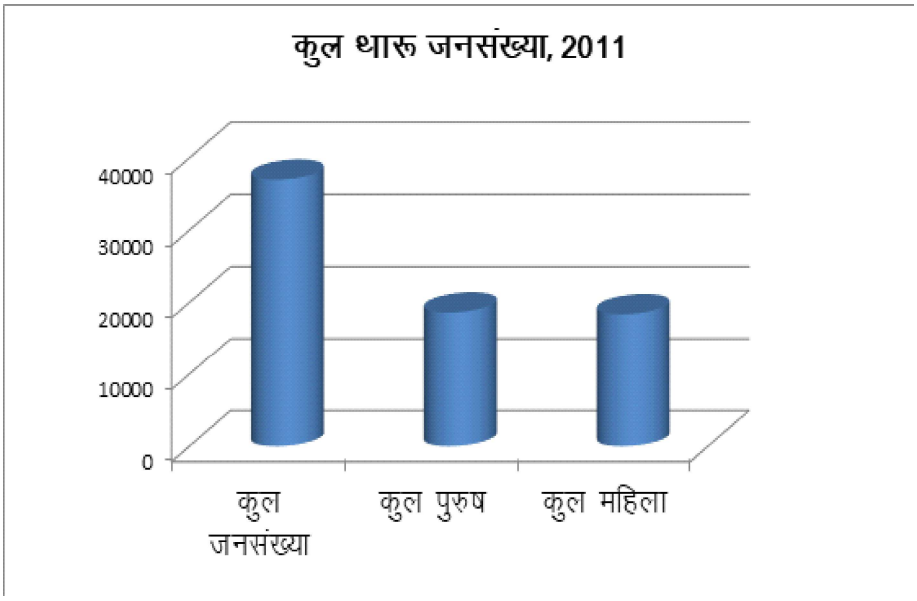

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका, 2011 ऊधमसिंह नगर

अध्ययन का उद्देश्य

- अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाओं के कुटीर उद्योगों के विभिन्न स्रोतों का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र की थारू महिलाओं के रोजगार प्राप्ति तथा आर्थिक स्थिति में परिवर्तन का अध्ययन करना।

कुटीर उद्योग में संलग्न थारू महिलाओं की भूमिका

मोमबत्ती बनाना

थारू महिलाएं अपने आप को स्वावलम्बी व कुशल बनाने के लिए विभिन्न समूहों द्वारा अपने घर में ही मोमबत्ती बनाने का कार्य कर रही है। जिससे उनके आर्थिक जीवन पर परिवर्तन होता नजर आ रहा है। थारू महिलाएं धीरे–धीरे आत्मनिर्भरता की मिसाल बनती जा रही है। थारू महिलाएं समाज की अब केवल गृहिणी नहीं बल्कि उद्यमिता की पहचान बन चुकी है। थारू महिलाएं मोमबत्ती निर्माण के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही है। ये थारू महिलाएं खाली समय में कैंडल बनाकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार रही है। कम लागत में शुरू हुआ यह व्यवसाय, दीपावली जैसे त्योहारों पर अच्छी आमदनी का साधन बना है। मोमबत्ती निर्माण में थारू महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सक्रिय भूमिका निभाई है, मोम को सांचे में ढालकर मोमबत्तियां बना रही है। यह हुनर या कौशल विकास पहल कर उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और दो से तीन हजार रुपये तक की आय प्रदान कर रहा है। साथ ही थारू महिलाएं इस कार्य को आधुनिक व्यवसाय में निपुण हो रही है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.048

चित्र 1 – मोमबत्ती बनाती थारू महिलाएं

घास से बने सामान

उत्तराखण्ड के उधमसिंह नगर के विकास खण्ड सितारगंज के क्षेत्रों में थारू जनजाति की महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से मूंज और कांस घास से कलात्मक वस्तुएं बना रही है। थारू जनजाति की महिलाएं पारंपरिक घास से डल्लैया, टोकरी, फूलदान, मैट और सजावटी के सामान बनाकर आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की मिसाल बन गयी है। थारू महिलाएं इस पारंपरिक कौशल के माध्यम से हजारों रुपये कमा रही है। यह शिल्पकार्य उनके लिए आजीविका का साधन होने के साथ ही साथ पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा भी दे रहा है। ये थारू महिलाएं अपनी स्थानीय काला का संरक्षण पीढ़ी–दर–पीढ़ी से चले आ रहे इस पारंपरिक हुनर को जीवित रखते हुए मूंज, कांस जैसी घास से अनुठी वस्तुओं का निर्माण कर रही है। ये थारू महिलाएं उत्पादों की विविधता के माध्यम से केवल टोकरियां ही नहीं, बल्कि मोबाइल कवर, वॉल हैंगिग, मैट, चप्पल, रोटी बॉक्स और अन्य सजावटी सामान भी बनाती है। ये थारू महिलाएं स्वयं ही कच्चा माल इकट्ठा करती है और सामान तैयार करती है तथा साथ ही साथ डिजाइन भी करती है जो उनके बढ़ते आत्मविश्वास और हुनर को दर्शाता है। ये थारू जनजाति की महिलाएं अपनी मेहनत से न केवल अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर रही है, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी नए तरीके से स्थापित कर रही है।

चित्र 2 – घास से डल्लैया बनाती थारू महिलाएं

कपड़े की दरी बनाना

थारू जनजाति की महिलाएं पारंपरिक हस्तकला में निपुण होकर अपने लिए लकड़ी के फ्रेम और चरखे की सहायता से यह कार्य करती है। इस क्षेत्र की थारू महिलाएं पारंपरिक कला और आत्मनिर्भरता के अनूठे उदाहरण के रूप में कपड़े की दरी बनाने में अहम भूमिका निभाती है। वे थारू

महिलाएं पुराने कपड़ों का फिर से पुनर्चक्रण कर उसे करघे या हाथों की मदद से रंग–बिरंगी मजबूत दरियां बनाती है। यह कार्य न केवल उनकी संस्कृति का हिस्सा है, बल्कि उन्हें स्वयं सहायता समूहों के जरिये आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है।

तालिका 2 : कुटीर उद्योग में लगी थारू महिलाएं

कार्य	कार्य में लगी थारू महिलाएं	प्रतिशत
कपड़े से दरी बनाना	10	4
मोमबत्ती बनाना	15	6
घास से सामान बनाना	80	34
सिलाई करना	50	20
बैग बनाना	25	10
पूजा थाली बनाना	15	6
आचार बनाना	30	12
पापड़ बनाना	20	8
कुल	**245**	**100**

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण, वर्ष 2023–24

तालिका 2 में विकासखण्ड सितारगंज में कपड़े से दरी बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 10 है, जो 4 प्रतिशत है। मोमबत्ती बनाने में 15 थारू महिलाएं है, जो 6 प्रतिशत है। घास से सामान बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 80 है, जो 34 प्रतिशत है। सिलाई करने वाली थारू महिलाओं की संख्या 50 है, जो 20 प्रतिशत है। बैग बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 25 है, जो 10 प्रतिशत है। पूजा की थाली बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 15 है, जो 6 प्रतिशत है। आचार बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 30 है, जो 12 प्रतिशत है। पापड़ बनाने वाली थारू महिलाओं की संख्या 20 है, जो 8 प्रतिशत है।

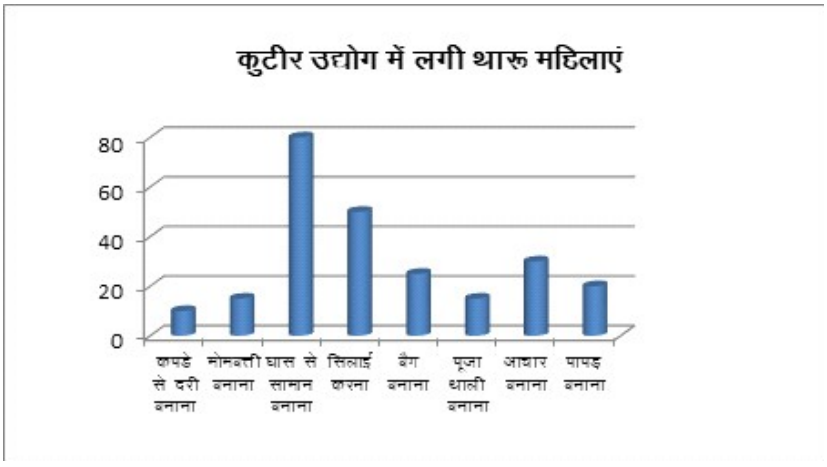

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण, वर्ष 2023–24

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.048

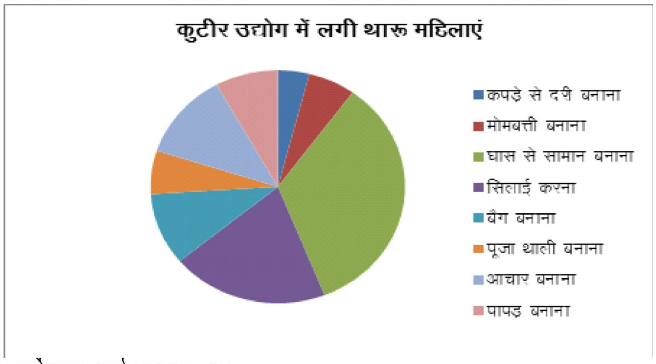

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण, वर्ष 2023–24

बैग बनाना

थारू महिलाएं कपड़ों के छोटे–छोटे टुकड़ों को जोड़कर अलग–अलग पैटर्न से बैग तैयार कर रही है। ये थारू महिलाएं समूह बनाकर काम करती है और सिलाई के माध्यम से महीने में अच्छा मुनाफा कमा रही है। ये महिलाएं अपनी पारंपरिक सिलाई को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित कर रही है। जिससे थारू समुदाय की सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रह सके। थारू महिलाएं अपनी इस कला के माध्यम से अब मजबूत और स्वयं की उद्यमी बन रही है, जिससे उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन आया है। ये महिलाएं कृषि मजदूरी के अलावा अब अपने हुनर से आय अर्जित कर रही है और इन महिलाओं को सीधे रोजगार मिल रहा है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर ये महिलाएं न केवल बैग बना रही है, बल्कि अपनी आय से 2–10 रुपये प्रति बैग का मुनाफा भी कमा रही है। ये थारू महिलाएं बड़े–बड़े षहरों में अपने हस्तशिल्प कार्य को पहुंचाकर अपने इस कौशल को प्रदर्शित कर रही है। ये थारू महिलाएं आत्मनिर्भरता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रही है।

सिलाई करना

थारू महिलाएं छोटे–छोटे परिवर्तन से अपने जीवन को सवार रही है। इस क्षेत्र की थारू महिलाएं सिलाई, कढ़ाई और हस्तशिल्प के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक नई कहानी लिख रही है। सिलाई और कढ़ाई के माध्यम से ये थारू महिलाएं अपनी अनूठी संस्कृति और आदिवासी पहचान को आधुनिक कपडों और वस्तुओं पर प्रदर्शित कर रही है। थारू महिलाओं की यह पहल न केवल उन्हें सशक्त बना रही है, बल्कि स्थानीय कला को भी जीवित रखे हुए है। वह एक सक्षम, जागरुक और सशक्त महिला का रूप ले चुकी है। वह सिलाई करके अपनी खुद की दुकानें तैयार कर ली है और अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने में लगी है। वे सिलाई के माध्यम से अलग–अलग तरह से लंहगे डिजाइन कर रही है। थारू महिलाएं सिलाई का काम करके अपनी आदमनी बढ़ा रही है।

पूजा थाली बनाना

पूजा थाली सजाने में थारू महिलाओं की भूमिका मुख्य रूप से रचनात्मकता, पंरपरा और भक्तिभाव को दर्शाती है। वे कुमकुम, अक्षत, दीये, फूल और पत्तियों से थाली को सजाकर उसे पवित्रता और सौम्यता का रूप देती है, जो घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। थारू महिलाएं

पूजा थाली को कलात्मक रूप से सजाती है। थारू महिलाएं थाली पर रंगीन लेस, गोटा, मोतियों और पेंट का उपयोग करके उन्हें सजाती है और उसे बाजार में बेचती है। जिससे उनकी आमदनी होती है। थारू महिलाएं अपने हुनर और कौशल से अपने इस कार्य को आगे बढ़ा रही है। वे पूजा थाली को रंग–बिरंगे रंगों से रंगा कर तैयारी करती है। थारू महिलाएं शुभ अवसर पर जैसे करवाचौथ, दीपावली आदि त्योहरों में बनाकर तैयार करती हैं।

महिलाओं की मासिक आय

अध्ययन क्षेत्र में कुटीर उद्योग में लगी महिलाओं की मासिक आय को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है जिसका उल्लेख तालिका में किया गया है–

तालिका 3 : महिलाओं की मासिक आय

क्र.	मासिक आय (रुपये में)	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
1	1500 से कम	80	32.69
2	1500–2000	70	28.56
3	2000–3000	45	18.35
4	3000–4000	30	12.25
5	4000–5000	20	8.15
	योग	**245**	**100**

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण, वर्ष 2023–24

तालिका 3 में विकासखण्ड सितारगंज में कुटीर उद्योग में लगी थारू महिलाएं अपने उत्पादों को विक्रय से प्राप्त होने वाले प्रति माह औसत आय की स्थिति को दर्शाता है। विकासखण्ड सितारगंज में थारू महिलाओं द्वारा कुटीर उद्योग से 1500 रुपये से कम प्रतिमाह औसत आय प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या 80 है जो 32.69 प्रतिशत है। 1500 से 2000 रुपये औसत आय वाली महिलाओं की संख्या 70 है, जो 18.56 प्रतिशत है। 2000 से 3000 रुपये औसत आय वाली महिलाओं की संख्या 45 है, जो 18.35 प्रतिशत है। 3000 से 4000 रुपये औसत आय वाली महिलाओं की संख्या 30 है, जो 12.25 प्रतिशत है। 4000–5000 से रुपये औसत आय वाली महिलाओं की संख्या 20 है, जो 8.15 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड सितारगंज की थारू महिलाएं कुटीर उद्योग द्वारा अपने परिवार के आय में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

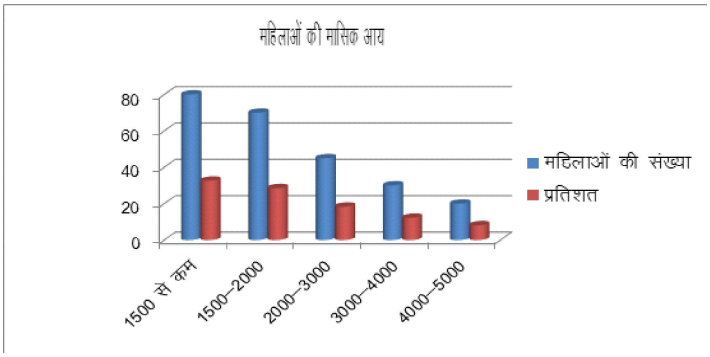

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण, वर्ष 2023–24

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.048

अचार व पापड़ बनाना

कुटीर उद्योग की बढ़ती महत्ता को ध्यान में रखते हुए अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं द्वारा बड़ी संख्या में इस उद्योग के माध्यम से पापड़ और अचार निर्माण का कार्य किया जा रहा है। थारू जनजाति की महिलाएं स्वयं सहायता समूह में जुड़कर अपना छोटा–सा एक स्वरोजगार कर रही है। वे अपने घर पर ही आचार व पापड़ बनाकर तैयार रही है और उसे बाजार में बेच रही है। जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि हो रही है और उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो रहा है। शुरू में महिलाओं को अचार और पापड़ बनाने का विचार आया जिसके बाद उन्होंने पहले इसकी ट्रेनिंग ली और फिर स्वयं निर्माण शुरू किया। आज वर्तमान समय में महिलाएं विभिन्न प्रकार के अचार, पापड़, चिप्स तैयार कर रही है। अचार और पापड़ सालभर चलने वाले उद्योग है। अचार और पापड़ की मांग तो वर्ष भर बनी रहती है शादी–व्याह में किसी त्योहार में तथा विशेष पर्वों आदि में। थारू जनजाति की महिलाएं समूह के माध्यम से अपने घर पर ही बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार के पापड़ और अचार का निर्माण करती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि थारू महिलाएं कुटीर उद्योग के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर रही है। वर्तमान समय में थारू जनजाति की महिलाएं खुद को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में लगी हुई है। थारू महिलाएं कुटीर उद्योग और अपने पारंपरिक कौशल से हजारों रुपये कमा रही है। थारू महिलाएं अपने इस हुनर से अपने जीवन को संवारने में लगी है। वे घास मूंज और कांस से तरह–तरह के सामान तैयार कर रही है। अपनी इस हस्तशिल्प कला को देश–विदेश में भी प्रदर्शित कर रही है। वे आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी है। थारू जनजाति की महिलाओं ने क्राफ्ट बनाकर देश–विदेश में अपनी पहचान बना रही है। जगंलों में पाई जाने वाली मूंज से थारू समाज की महिलाएं उत्पादों को तैयार करती है। एक समूह में कुल 10 महिलाएं होती है और समूह के माध्यम से हजारों महिलाएं काम करती है। समूह से जुड़कर महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही है और सशक्त बन रही है और साथ ही गांव की अन्य महिलाओं को रोजगार भी दे रही है। थारू जनजाति क्षेत्र की रहने वाली महिलाएं अपने हाथों से हस्तशिल्प उत्पाद को तैयार करती है और उसकी ब्रिकी करने के बाद अपनी आजीविका चलाती है। थारू जनजाति की महिलाएं अपनी किस्मत बदल रही है और उन्हें अच्छा–खासा फायदा भी होता है। थारू महिलाएं हस्तशिल्प और हैंडीक्राफ्ट से डल्लैया और फल रखने वाली टोकरिया बनाती है। घास से बनी ये वस्तुएं टिकाऊ और देखने में सुन्दर भी लगते है, जिस कारण इनकी बाजारों में लगातार डिमांड बढ़ती जा रही है।

सन्दर्भ

1. श्रीमती वंदना धुर्वे, डॉ. चन्द्रिका नाथवानी, शोध पत्र– ''कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन,'' पृ0सं0– **804–810**, जून 2022
2. डॉ. नीलम चौरसिया, ''ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका,'' जनवरी 2023

3. शीलु कुमारी, ''कुटीर एवं लघु उद्योगों में महिला उद्यमिताः रोजगार सृजन एवं महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव,'' पृ0सं0–**1–9**, 2025
4. पांडा, ''लघु एवं कुटीर उद्योगों का सशक्तिकरण,'' कुरूक्षेत्र, नवम्बर 2017
5. ओमप्रकाश लाल श्रीवास्तव, '' महिला सशक्तिकरण और कुटीर उद्योगः विकास का नवीन उपागम'', खंड–14, अंक–1, पृ0सं0– **151**, जनवरी–जून, 2022
6. जितेन्द्र कुमार सिन्हा, ''महिलाएं कुटीर उद्योग के माध्यम से बन सकती है आत्मनिर्भर'', 19 फरवरी 2022
7. श्रीमती पदमा सोमनाथे, श्रीमती कविता सिलवाल, ''लघु एवं कुटीर उद्योग के क्षेत्र में महिला उद्यमी की भूमिका,'' 2013
8. श्रीमती वंदना धुर्वे, डॉ. चन्द्रिका नाथवानी, ''पापड़ उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन'', पृ0सं0– **336**, अप्रैल 2023